Twelve
CORE Training

प्रशिक्षक की कुंजी

पाठ 3-0 बच्चों की विशेषताएँ

उद्देश्य

- उन चार क्षेत्रों की खोज करने के लिए जिसमें सभी बच्चे बढ़ते हैं।
- विभिन्न उम्र के बच्चों की महत्वपूर्ण विशेषताओं पर ध्यान देना और अलग-अलग उम्र के बच्चों की गतिविधियों को कैसे अनुकूलित करें।
- पाठ में बच्चे के सभी भागों को शामिल करने के तरीकों पर मंथन करना।

पाठ अवलोकन

स्वागत और तैयारी	5 मिनट
बच्चे को बनायें	5 मिनट
परमेश्वर ने बच्चों को कैसे बनाया?	5 मिनट
एक बच्चे के चार भाग	10 मिनट
विभिन्न आयु वर्ग के बच्चें	30 मिनट
सम्पूर्ण बच्चे से जुड़ना	5 मिनट
समेटें	5 मिनट
लगभग कुल समय:	**65 मिनट**

प्रतिभागियों को ज़रुरत होंगी:

- बाइबल
- प्रतिभागी नोट्स
- लेखन सामग्रियाँ

चित्रण विकल्प:

- मिटाने योग्य बोर्ड और लेखन सामग्रियाँ
- मिट्टी, खेल वाला आटा, पाइप क्लीनर या पेपर
- बच्चों की वास्तविक तस्वीरें
- बिना खुलने वाली फली या बीज के पैकेट

मीडिया विकल्प:

- इस पाठ के लिए पवर पॉइंट् स्लाइड

आरम्भ करने से पहले

- प्रार्थना करें। प्रतिभागियों के दिलों को खोलने और इस महत्वपूर्ण विषय के बारे में अपने हृदय से उनसे बांटने में आपकी सहायता करने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।
- सभी सामग्रियों को इकट्ठा करें (दाहिनी ओर देखें)। आवश्यकतानुसार अदला बदली करें।
- पाठ को उन जगहों को खोजने के लिए पढ़ें जहाँ आपको व्यक्तिगत कहानी या विचार देने के लिए कहा जाएगा। पहले से ही सामर्थी उदाहरण चुनने की योजना बनाएँ।

स्वागत और तैयारी

(5 मिनट)

एक अभिनय गीत गाएं: केले के दीवाने

(प्रतिभागियों को खड़े होने के लिए कहें।) बच्चों के बारे में एक सच्चाई हम जानते हैं कि बच्चों को हिलना डुलना पसंद है, इसलिए हम भी हिलना डुलना चाहते हैं! दुनिया भर में सबसे सामान्य रूप से खाने वाले फलों में से एक केला है। बच्चे उसे पसंद करते हैं। हम भी उसे पसंद करते हैं। चलो, एक एक्शन गीत गाएँ/केले के बारे में गुनगुनाएँ। (एक गीत के लिए निम्न राग गाएँ, और अभिनय को बड़ा और मजाकिया बनाएँ।)

पहले हम केले उगाते हैं, उगाते हैं, केले उगाते हैं। (अपनी राग की गति बढ़ाते जाएँ)
केले उगाते, उगाते, केले उगाते हैं
केले उठाएँ, उठाएँ, केले उठाएँ (चुनने के समय गति को बढ़ाएँ)
केले उठाएँ, उठाएँ, केले उठाएं
केले छीलें ...
केले काटें...
केले मसलें...
केले खाएँ...
केले बॉटें...
केलों पर लपकें! (मतलब पागल हो जाएँ।)

हम सभी जानते हैं कि बच्चों में अद्भुत चीजें करने की क्षमता होती है। हम आत्मिक रूप से अपने जीवन के हर क्षेत्र में पूरी क्षमता में कैसे बढ़ सकते हैं? यदि हम समझते हैं कि परमेश्वर ने बच्चों को कैसे विकसित किया है, तो यह हमारी सहायता करता है। **50हाथ के लिए1: यह पाठ हमें बच्चों के मूल विकास संबंधी विशेषताओं को समझाकर "सम्पूर्ण बच्चे को पोषित" करने पर विचार करना आरम्भ करता है।**

एक बच्चे को बनाना

(5 मिनट)

एक बच्चे को बनाने की कोशिश करें

(प्रतिभागियों को खेलने का आटा, एक पाइप क्लीनर या पेपर दें। यदि समूह बड़ा है, तो आप इस गतिविधि को समूह के सामने करने के लिए तीन या चार स्वयंसेवकों का चयन कर सकते हैं। समझाएं कि आप थोड़ी सी प्रतिस्पर्धा कराएंगे। प्रत्येक विद्यार्थी को बच्चे बनाने के लिए निर्देश दें। प्रतिभागियों को कुछ मिनट के लिए अपने "बच्चे" पर कार्य करने की अनुमति दें। फिर तैयार वस्तुओं को देखें। सामान्यतः कुछ दिलचस्प रचनाओं में बड़ा ही मज़ा आता है! यदि आपको लगता कि यह उपयुक्त है तो प्रतिभागियों को सबसे अच्छा चुनने दें।

क्या वास्तव में हमारी रचना बच्चों की तरह दिखाई देती है? (अलग-अलग पृष्ठभूमियों वाली और दुनिया के विभिन्न हिस्सों से ली हुई बच्चों की तस्वीर दिखाएं।)
क्या हम वास्तव में एक बच्चा बना/तैयार कर सकते हैं? नहीं। केवल परमेश्वर ही बच्चों को बना सकता है, और उसने इसे एक शानदार तरीके से किया है।

परमेश्वर ने बच्चों को कैसे बनाया? *(5 मिनट)*

भजन संहिता 139 :13-16 को पढ़ें।

यह वचन, हमें परमेश्वर द्वारा बच्चों को बनाए जाने के बारे में क्या सिखाता है?

(पता लगाएं कि उसने उन्हें बनाया था। वह उनको देखता था। उसने उनके भीतरी मनुष्यत्व को बनाया। परमेश्वर उनके जन्म से पहले, उनके जीवन की योजना बना रहा था।

एक बच्चे के चार भाग *(10 मिनट)*

परमेश्वर ने कैसे बच्चों को बढ़ने के लिए बनाया

बच्चे और वयस्क अलग कैसे होते हैं? (प्रतिभागियों को दो समूहों में विभाजित करें। जहाँ पर वे बैठे हैं और समूहों को बारी-बारी से जवाब देने के लिए, आगे पीछे उछलने के लिए कहें।)

हम सभी जानते हैं कि बच्चे वयस्कों से अलग होते हैं, यह परमेश्वर द्वारा उन्हें बनाने का एक तरीका है। वह हैरान नहीं होता है जब बच्चे हिलते-डुलते, चलते, रोते, थकते आदि हैं। वह उनकी विशेषताओं के बारे में अच्छी तरह से जानता है।

यहां तक कि यीशु भी, एक बच्चे के रूप में, एक विशिष्ट बच्चे की तरह से बढ़ रहा था। **लूका 2:52 में पढ़ते हैं कि यीशु किन चार भागों में बढ़ा?** (बुद्धि, डील-डौल, परमेश्वर का अनुग्रह, मनुष्य का अनुग्रह में)

हमारे बच्चें भी उसी तरह से बढ़ते हैं जैसे कि यीशु बढ़ा। आइए, इन चार क्षेत्रों को और अधिक बारीकी से देखें। (बोर्ड पर एक बच्चे की एक बड़ी रूपरेखा तैयार करें।)

जब आप विकास के चार क्षेत्रों के बारे में बात कर रहे हैं तो अजीब-ओ-गरीब व्यक्तिगत कहानियों को भी जोड़ सकते हैं।

भौतिक (बच्चे के शरीर की रूपरेखा देखें):

लूका 2:52 कहता है कि यीशु "डील-डौल" में बढ़ता गया, जो कि उनके शारीरिक विकास को दर्शाता है। हमारे बच्चों के शरीर बढ़ते हैं तो हम देख सकते हैं कि उनका आकार, शक्ति और भूख कैसे बदलती जाती हैं! हम उन्हें कौशल हासिल करने और उनके आसपास की दुनिया में रहना सिखाते हैं। वे अपने शरीर के सभी हिस्सों, अपनी पांच इंद्रियों के माध्यम से जानकारी लेते हैं: देखने, सुनने, सूंघने, चखने और छूने के द्वारा। (एक चित्र पर, आंखें, कान, नाक और मुंह, और हाथों पर घेरा लगाएँ।) यहाँ तक कि उनके खेलने का समय, उनके शारीरिक विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।

मानसिक (बच्चे के सिर में एक मस्तिष्क बनाएँ):

लूका 2:52 कहता है कि यीशु "बुद्धि में" बढ़ता गया। हमारे बच्चे भी ज्ञान से बढ़ते हैं और अपने ज्ञान के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेते हैं। वे सवाल पूछते हैं क्योंकि उनका दिमाग लगातार काम पर लगा रहता है। लेकिन जब वे ज्ञान में वृद्धि करते हैं, तो उन्हें जानकारी का महत्व सीखना चाहिए, अच्छे का चुनाव करना और हानिकारक को अस्वीकार करना सीखना चाहिए।

सामाजिक-भावनात्मक (शरीर की बाह्यरेखा के बाहर एक घेरा बनाएँ या एक दूसरा चित्र बनाएं तथा उन्हें हाथ पकड़ते हुए बनाएँ):

लूका 2:52 कहता है कि यीशु "मनुष्य के अनुग्रह में" बढ़ता गया। हमारे बच्चे भी अपनी भावनाओं को समझने के लिए बढ़ रहे हैं और उचित तरीके से अपने आसपास के अन्य लोगों के साथ बातचीत कर सकते हैं। परमेश्वर ने एक अद्वितीय व्यक्तित्व के साथ हर बच्चे को बनाया और वे काफी अलग हो सकते हैं। कुछ सेवामुक्त होते हैं, जबकि अन्य शांत और शर्मीले होते हैं। कुछ हंसी-मज़ाक पसंद करते हैं, जबकि अन्य गंभीर होते हैं। उनकी भावनाएं और व्यक्तित्व, अन्य बच्चों, शिक्षक और समूह के साथ में उनके सामाजिक व्यवहार को भी प्रभावित करते हैं।

आत्मिक (बच्चे के शरीर के बीच में एक हृदय बनाएं):

लूका 2:52 कहता है कि यीशु "परमेश्वर के अनुग्रह में" बढ़ता गया। हमारे बच्चे भी आत्मिक तौर से बढ़ते हैं, परमेश्वर को जानने की चाहत और उससे प्यार करने की इच्छा होती है। आत्मिक विकास का एक हिस्सा बच्चे के अंदर होता है, वह हिस्सा जिसे केवल परमेश्वर ही देख सकता है। हम अपने बच्चों को परमेश्वर का अनुभव करना और उसके प्रति जवाब देना सिखाना चाहते हैं।

(एक बच्चे के चार प्रकारों की समीक्षा करें: यीशु ज्ञान, डील-डौल (कद) और परमेश्वर तथा मनुष्य के पक्ष में बढ़ता गया। आप हाथ के संकेतों को भी शामिल कर सकते हैं।)

जब कि हमारे बच्चे वैसा बनने का प्रयास कर रहे हैं जिनके लिए परमेश्वर ने उन्हें रचा है, तो वे उन सभी क्षेत्रों में बढ़ते जायेंगे। अब हम देखेंगे कि इन चार क्षेत्रों में बच्चें कैसे बढ़ते हैं और विभिन्न उम्र के बच्चों में अंतर को भी जो हम देखते हैं।

विभिन्न आयु वर्ग के बच्चें

(30 मिनट)

आयु विशेषता वाले चार्ट की समीक्षा करें

(प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभाजित करें - एक समूह बहुत ही छोटे बच्चों का होगा - 2-4 वर्ष का, एक समूह युवा स्कूल-आयु वर्ग के बच्चे होंगे-5-8 वर्ष और एक समूह बड़ी उम्र के स्कूल बच्चों का होगा जिनकी उम्र-9-12 साल होगी। उनके नोट्स में चार्ट, "विभिन्न समयों में बच्चों के मूल लक्षण", का उपयोग करते हुए, प्रतिभागी, अपने समूह में नियोजित उम्र के बच्चों का एक नाटक तैयार करेंगे, जिसमें वे बताएँगे कि इस आयु वर्ग के बच्चे किस तरह से होते हैं। नाटक में विकास के सभी चार भागों को शामिल किया जाना चाहिए; लेकिन यह केवल दो मिनट से अधिक लंबा न हो। समूहों को, अपने-अपने नाटक तैयार करने के लिए दस मिनट का समय दें। यदि किसी समूह का आकार 30 से अधिक लोगों के बराबर होता है, तो कक्षा को छह समूहों में विभाजित करें और दो समूहों को एक ही आयु वर्ग के साथ काम करना होगा, जो कि अपने विभिन्न विकास क्षेत्रों पर केंद्रित होते हैं।

समूहों को अपने नाटकों का प्रदर्शन करने दें। प्रत्येक नाटक के बाद, इस पर चर्चा करें कि किन-किन विशेषताओं का प्रदर्शन किया गया है। चार्ट से उन बिन्दुओं को उठाके बताएँ जिसे समूह ने छोड़ दिया हो।)

संस्कृति तथा अन्य पृष्ठभूमि संबंधित मुद्दों के आधार पर "सामान्य" विकास व्यापक रूप से अलग होता है हालांकि, जैसे-जैसे वे विकास करते हैं तो ये व्यापक समूह बच्चों के विकास में मतभेदों को ध्यान में लाने में सहायता करते हैं।

विभिन्न उम्र के बच्चों को एकएक कहानी बताएं-

(पाठ से पहले, जक्कई की कहानी के समान बच्चों को एक संक्षिप्त बाइबल की कहानी सुनाने के लिए तैयार रहें। सभी समूहों को यह कल्पना करने के लिए आमंत्रित करें कि वे सभी आपकी बाइबल कक्षा में हैं। समझाएं कि आप उन्हें एक छोटी सी बाइबल की कहानी बताएँगे और जब आप ऐसा करते हैं, उन्हें अपने समूह की उम्र के बच्चों के रूप में व्यवहार करना होगा, जो एक कक्षा के समान व्यवहार करेंगे। कहानी को बताएँ, यह महसूस करते हुए कि कक्षा थोड़ी सी अव्यवस्थित हो सकती है क्योंकि लोग बच्चों के समान व्यवहार करते हैं।)

पूरे समूह के साथ निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करें:

- **कक्षा में बच्चों द्वारा व्यवहार करने के तरीके में अंतर के बारे में आपने क्या देखा?**
- **ये अंतर किस प्रकार से बच्चों के सीखने को प्रभावित कर सकते हैं?**
- **क्या हम उम्मीद कर सकते हैं कि बच्चे इसी तरीके से अलग-अलग आयु वर्ग में सीखेंगे।**

शिक्षण या बच्चों की अगुवाई करने का एक मनोरंजक उदाहरण को बाँटें और ऐसी गतिविधियों को भी जो उम्र के अनुसार उपयुक्त नहीं थीं।

विभिन्न आयु में शिक्षण गतिविधियों को समायोजित करना

(प्रतिभागियों को अपने तीन "आयु समूहों" पर फिर से वापस जाने के लिए आमंत्रित करें। प्रत्येक समूह को उनकी आयु वर्ग के बच्चों की कक्षा के समय में, बेहतर ढंग से सीखने के लिए विचारों या गतिविधियों की एक सूची बनाएँ। पाँच मिनट के बाद, समूहों को अपने कुछ अच्छे विचारों को सभी प्रतिभागियों के साथ बाँटने की अनुमति दें, उन्हें बोर्ड पर लिखने को कहें। यदि कुछ समूह कहीं पर अटक जाते हैं तो आप अपने स्वयं के कुछ विचारों को जोड़ सकते हैं। आप शायद यह भी चाहेंगे कि वे अपने आयु वर्ग की अयोग्य गतिविधियों के बारे में सोचें।)

हम देख सकते हैं कि बच्चों को यीशु के चेले के रूप में विकसित करने में सहायता करने के लिए, हमें उनकी विकास संबंधी जरूरतों के बारे में पता होना चाहिए और उस ज्ञान का उपयोग करना चाहिए जब हम उन्हें सिखाने के लिए उपयोग में लाना चाहते हैं। जब हम सिखाते हैं, तो हमें न केवल उनके मन के साथ वरन सम्पूर्ण बच्चे के साथ जुड़ने के लिए भी जानबूझकर कार्य करना चाहिए।

सम्पूर्ण बच्चे के साथ जुड़ना

(5 मिनट)

हम किसी बच्चे की आत्मा के साथ कैसे जुड़ सकते हैं?

हम आमतौर पर, कक्षा की व्यवस्था में एक बच्चे के किन सामान्य भागों पर ध्यान केंद्रित करते हैं?

मानसिकः बाइबल की आयतों और कहानियों को पढ़ाना ताकि बच्चे उन्हें याद रख सकें।

सामाजिक भावनात्मकः आशा-करते हुए कि बच्चे कक्षा में बैठें और ठीक से व्यवहार करें

हम बच्चों के साथ अपने काम में सबसे अधिक सफलता तब प्राप्त कर सकते हैं जब हम किसी बच्चे के चार भागों के साथ जुड़ जाते हैं। इसका अर्थ है कि हम ऐसी गतिविधियों की योजना बनाते हैं जिनमें उनके दिमाग शामिल होते हैं, लेकिन साथ ही साथ उनके शरीर और उनके सामाजिक भाग भी शामिल होते हैं।

क्या कुछ ऐसी भी क्रियाकलाप हैं जिन्हें हम पढ़ाते समय कर सकते हैं जिसमें बच्चों के ये विभिन्न हिस्से शामिल हों? (उत्तर में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:)

मन : स्मरण करना, चर्चा, आदि।
शरीरः खेल, नाटक, गाने के लिए क्रियाएं ,आदि
सामाजिकः एक साथ मिलकर बात करना, खेलना, समस्याओं को हल करना, आदि।

हम यह भी चाहते हैं कि बच्चों को आत्मिक रूप से विकसित किया जाए। लेकिन यह किसी बच्चे का एक गहरा आंतरिक हिस्सा होता है। हम हमेशा यह नहीं बता सकते हैं कि अंदर क्या चल रहा है, भले ही यह बहुत महत्वपूर्ण ही क्यों न हो।

एक शिक्षण व्यवस्था में आप किस तरह की गतिविधियां कर सकते हैं जिससे कि बच्चे की आत्मा को परमेश्वर से जुड़ने में सहायता मिल सके? (प्रतिभागियों को कुछ मिनटों के लिए विचारों पर चर्चा करने के लिए तीन या चार के समूह में बांट दें। फिर एक समूह के रूप में एक साथ जवाब बाँटें। उत्तर में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं: शांत ध्यान/मनन का समय या प्रार्थना, विचारणीय संगीत, व्यक्तिगत प्रतिबिंबित सवाल, पाठ के बारे में लिखने या बनाने के लिए कुछ स्थान, विचारणीय वातावरण, प्रकृति, आराधना के गीत बजाना या गाना आदि)

परमेश्वर को किसी बच्चे की आत्मा से जोड़ने में सहायता करने के लिए, किसी शिक्षक का एक प्रभावशाली उदाहरण को बाँटें।

समेटना और प्रार्थना

(5 मिनट)

अब आप क्या करेंगे?

हमारी सेवकाई में बच्चों के साथ हमारा लक्ष्य है कि उन्हें यीशु मसीह के चेले बनाएँ। ऐसा करने के लिए, हमें अपने बच्चों को हर प्रकार से विकसित होने में सहायता करना होगा, जैसे कि यीशु का विकास हुआ।

मरकुस 12:30 को पढ़ें (प्रतिभागियों को अपने नोट्स में उन शब्दों को रेखांकित करने दें जिसमें बच्चे के चार हिस्सों का संदर्भ दिया गया है।) यदि हम अपने बच्चों को, हर प्रकार से विकसित करने में सहायता करते हैं, तो जो वे हैं, वे उन सभी भागों के साथ परमेश्वर से प्रेम करने के बारे में सीखेंगे। यह सबसे बड़ा उपहार है जो वे कभी भी परमेश्वर को दे सकते हैं।

बिना खुलने वाली फली: बच्चों की क्षमता

(बिना खुलने वाली फली या बीज का पैकेज दिखाएँ।) इस फली के भीतर होने वाले सभी संभावित बातों पर विचार करें, लेकिन इसका निवेश नहीं किया गया है! क्या होता यदि इन बीजों को कई सालों पहले लगाया गया होता? हम बच्चों को साधारण, छोटे या तुच्छ रूप में देख सकते हैं। लेकिन कल्पना करें कि मसीह में होने पर उनके पास क्या-क्या संभावनाएँ होंगी यदि हम उनके भीतर संभावनाओं के बीज का पोषण करते हैं।

- **क्या विकास का कोई क्षेत्र है, जिस पर आपने पहले विचार नहीं किया हो?**
- **परमेश्वर आपको अपनी सेवकाई में बच्चों के बारे में क्या कह रहा है?**
- **आप क्या करेंगे?**

आइए, एक साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना करें कि यीशु के समान ही आपकी सेवकाई में बच्चों का विकास हो। अपनी सेवकाई वाले बच्चों के सभी भागों के बारे में जागरूक होने में सहायता करने के लिए परमेश्वर से कहें। प्रार्थना करें कि आप उन्हें बुद्धिमानी और उपयुक्त तरीके से सिखा सकें। प्रार्थना करें कि वे अपने सम्पूर्ण हृदय, आत्मा, मन और शक्ति से परमेश्वर से प्रेम करने में बढ़ते चले जाएँ।

(समूह को प्रार्थना के समय के साथ समाप्त करें।)